KHAN GLOBAL STUDIES

KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

The Most Trusted Learning Platform

8-9H

→ आर्य

7

-14

-21 X

→ H → T

→ H → T

- 4 - T

वर्णमाला

वर्ण + माला

मौखिक → ध्वनि / वर्ण - क्

लिखित

↓

अक्षर - क

↓

पद / शब्द - कमल

↓

पदबंध

सार्थक

↓

उपवाक्य -

↓

⇒ वाक्य

↓

भाषा

वर्णमाला

वर्ण

विज्ञान ↓

मान्यताएँ →

अ इ उ ऋ

मूल वर्ण = ४

मूल स्वर = ४

By – Jitendra Soni

- वर्णमाला

- वर्ण

By – Jitendra Soni

- वर्ण किसी भी भाषा के सबसे छोटी ध्वनि वर्ण कहलाती हैं, अर्थात् ऐसी ध्वनि जिसका अंतिम विभाजन कर दिया गया है एवं आगे विभाजन किया जाना संभव नहीं है तो वह ध्वनि वर्ण कहलाती है;

जैसे – क् च् छ् ज् झ्

- अक्षर

By - Jitendra Soni

अक्षर की परिभाषा :- जब किसी वर्ण का अथवा वर्णों के समूह का उच्चारण जीभ के एक झटके से कर दिया जाता है तब उस वर्ण को अथवा वर्णों के समूह को अक्षर कहा जाता है; जैसे - च , ट , त , प इत्यादि।

By - Jitendra Soni

कोई भी व्यंजन ध्वनि यदि ह्लनत (क्) रुप में लिखी जाती है तब तो वह वर्ण कहलाती है एवं यदि बिना हलन्त (क) लिखी जाती है तब वह अक्षर कहलाती है।

By - Jitendra Soni

प्र. (1) निम्न में से अक्षर ध्वनि नहीं है ?

(क) ऋ

(ख) ग

(ग) आ

(घ) म्

By - Jitendra Soni

वर्ण के भेद :- हिन्दी व्याकरण में अथवा वर्णमाला में वर्ण प्रमुखत : दो प्रकार के माने जाते हैं -

1. स्वर वर्ण

2. व्यंजन वर्ण

By – Jitendra Soni

- स्वर

By - Jitendra Soni

▪ स्वर वर्ण

जब किसी ध्वनि का उच्चारण करने पर हमारे फेफड़ों से उठी हुई श्वास वायु हमारे मुख में आकर बिना किसी रुकावट / व्यावधान / बाधा / संघर्ष के मुख से बाहर निकल जाती है, तो वह स्वर ध्वनि कहलाती है।

By - Jitendra Soni

- हिन्दी वर्णमाला में निम्नलिखित 11 स्वर ध्वनियाँ शामिल की गयी हैं।
- अ , आ , इ , ई , उ , ऊ , ऋ , ए , ऐ , ओ , औ ।

By - Jitendra Soni

प्र. (1) निम्न में से अक्षर स्वर नहीं है ?

(क) ऋ

(ख) इ

(ग) आ

(घ) त्

By - Jitendra Soni

- (i) हमारी हिन्दी भाषा का विकास संस्कृत भाषा से निम्न क्रमानुसार हुआ माना जाता है -
- संस्कृत - पालि - प्राकृत - अपभ्रंश - हिन्दी

By - Jitendra Soni

- संस्कृत भाषा में मूलतः 9 एवं कुल 13 स्वर ध्वनियाँ प्रयुक्त होती हैं।
- मूल 9 स्वर - अ, इ, उ, ऋ, ऌ, ए, ओ, ऐ, औ।
- अन्य स्वीकृत चार स्वर - आ, ई, ऊ, ॠ।

By - Jitendra Soni

- पालि एवं प्राकृत भाषा में निम्नलिखित 10 स्वर ध्वनियाँ शामिल की गयी हैं।
- अ , आ , इ , ई , उ , ऊ , ए , ऐ , ओ , औ

By - Jitendra Soni

- अपभ्रंश भाषा में निम्नलिखित 8 स्वर ध्वनियाँ शामिल की गयी हैं।

- अ , आ , इ , ई , उ , ऊ , ए , ओ ।

By - Jitendra Soni

प्रश्न 1. निम्न में से कौन - सी स्वर ध्वनियाँ अपभ्रंश में प्रयुक्त नहीं होती हैं।

(क) अ , आ

(ख) इ , ई

(ग) ए , ओ

(घ) ऐ , औ

By - Jitendra Soni

प्रश्न 1. निम्न में से कौन - सी स्वर ध्वनियाँ पाली में प्रयुक्त नहीं होती हैं।

(क) अ

(ख) ऋ

(ग) ए

(घ) ऐ

By - Jitendra Soni

स्वरों का वर्गीकरण -

By - Jitendra Soni

स्वरों का वर्गीकरण प्रमुखत : पाँच आधारों पर किया जाता है

1. मात्राकाल के आधार पर
2. उच्चारण के आधार पर
3. जिह्वा के उत्थापित भाग के आधार पर
4. मुखाकृति के आधार पर
5. होठ की गोलाई के आधार पर

By - Jitendra Soni

- विशेष तथ्य - मात्राकाल के आधार पर स्वरों की यह वर्गीकरण सर्वप्रथम महर्षि पाणिनि के द्वारा स्वरचित 'अष्टाध्यायी' रचना में किया गया था।

अ
इ
उ
ऋ

मुर्गी

अ
इ
उ
ऋ

+ आ
ई
ऊ

① उ → ह्रस्व स्वर → कम समय लगे - 1 मात्रा

② उ + उ = ऊ - दीर्घ स्वर - दुगना समय - 2 मात्रा

अ + अ = आ
इ + इ = ई
उ + उ = ऊ
ऋ + ऋ = ॠ

• अ + अ + अ .... = आ3
इ + इ + इ ... ई3
उ + उ + उ ... ऊ3

→ प्लुत स्वर ⇒ तीन मात्रा

राऽऽऽऽऽम - नाटक → लम्बा उच्चारण

संस्कृत × राम् - इरखो

द्विमात्रिक

दीर्घ स्वर

विजातीय स्वर =

संयुक्त स्वर = 4

संधि स्वर

अ + इ = ए

अ + ए = ऐ

अ + उ = ओ

अ + ओ = औ

] 4

ह्रस्व → अ इ उ ऋ

दीर्घ स्वर

सजातीय स्वर -

द्विमात्रिक स्वर

अ + अ = आ

इ + इ = ई

उ + उ = ऊ

] - 3

↑

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ।

→ हिंदी स्वर = 11

a + b = c

संयुक्त

दीर्घ स्वर = ?

①

A — अ

✓✓ B — ए

C — इ

D — उ

②

A — ए

B — ऐ

✓✓ C — आ

D — ओ

By - Jitendra Soni

- महर्षि पाणिनि ने मुर्गे को प्रात : कालीन आवाज (कू कू कू ...) को सुनकर सर्वप्रथम ' उ ' स्वर को ह्रस्व - दीर्घ - प्लुत इन तीन भागों में विभाजित किया था एवं तदुपरान्त अन्य स्वरों को भी इसी प्रकार तीन - तीन भागों में विभाजित कर दिया गया ।

By - Jitendra Soni

मात्राकाल के आधार पर : -

By - Jitendra Soni

किसी भी स्वर के उच्चारण में लगने वाले समय को मात्रा कहते हैं।

मात्राकाल के आधार पर स्वर तीन प्रकार के माने जाते हैं।

1. ह्रस्व स्वर
2. दीर्घ स्वर
3. प्लुत स्वर

By - Jitendra Soni

ह्रस्व स्वर : -

By - Jitendra Soni

1. ह्रस्व स्वर :- जब किसी स्वर के उच्चारण में सामान्य समय अर्थात् एक मात्रा का समय लगता है तब वह ह्रस्व स्वर कहलाता है।

एक मात्रा का समय लगने के कारण ह्रस्व स्वर को एक मात्रिक स्वर के नाम से भी पुकारा जाता है।

By - Jitendra Soni

व्याकरण में ह्रस्व स्वरों की रचना सबसे पहले की गयी थी। जिसके कारण ह्रस्व स्वर को मूल स्वर के नाम से भी पुकारा जाता है।

हिन्दी वर्णमाला में निम्नलिखित 4 ह्रस्व स्वर माने गये हैं - ' अ , इ , उ , ऋ '

By - Jitendra Soni

2- दीर्घ स्वर -

By - Jitendra Soni

- दीर्घ स्वर - जब किसी स्वर के उच्चारण में सामान्य से दुगुना समय अर्थात् दो मात्राओं का समय लगता है तब वह दीर्घ स्वर कहलाता है।

- दो मात्राओं का समय लगने के कारण दीर्घ स्वर को द्विमात्रिक स्वर के नाम से भी पुकारा जाता है।

By - Jitendra Soni

- हिन्दी वर्णमाला में निम्नलिखित 7 दीर्घ स्वर माने गये हैं।
- 'आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ

By - Jitendra Soni

- इन सातों दीर्घ स्वरों को पुन : दो भागों में विभाजित किया गया है -
- (क) समानाक्षर
- (ख) सन्ध्यक्षर

By - Jitendra Soni

- 1. समानाक्षर - समान स्वरों के योग से बनने वाले दीर्घ स्वर समानाक्षर कहलाते हैं -

- आ = अ + अ
- ई = इ + इ
- ऊ = उ + उ

By - Jitendra Soni

- सन्ध्यक्षर - समान स्वरों के योग से बनने वाले दीर्घ स्वर सन्ध्यक्षर अथवा संधि स्वर कहलाते हैं।

- ए = अ + इ
- ऐ = अ + ए
- ओ = अ + उ
- औ = अ + ओ

कुल संख्या = (04)

By - Jitendra Soni

- प्लुत स्वर - सामान्यत : कोई भी स्वर प्लुत नहीं होता है परन्तु जब किसी स्वर के उच्चारण में सामान्य से तिगुना समय अर्थात् तीन मात्राओं का समय लग जाता है। तब वह प्लुत स्वर माना जाता है ।

By - Jitendra Soni

- स्वर के प्लुत रुप को दर्शाने के लिए उसके साथ '3' चिह्न का प्रयोग कर दिया जाता है।
- अ3 , आ3 , इ3 , ई3 , उ3 , ऊ3 , ऋ3 , ए3 , ऐ3, ओ3 , औ3

By – Jitendra Soni

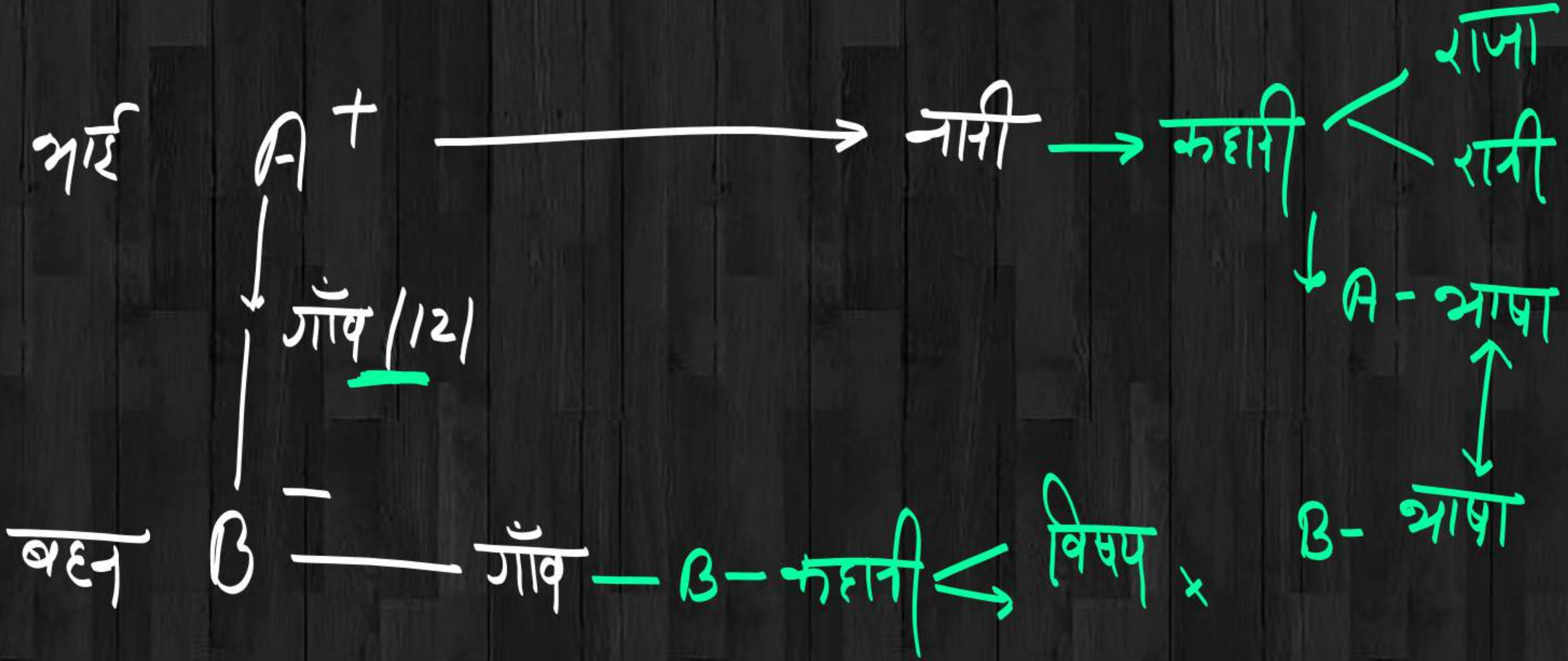
भाई
A +
नानी
कहानी
राजा
रानी
A - भाषा
B - भाषा
गाँव /12/
बहन
B −
गाँव
B - कहानी
विषय ×

1500 ई०पू० - 1000 ई०पू० | 1000 - 500 ई०पू० | 500 ई०पू० - 1 ई०

वैदिक संस्कृत → लौकिक संस्कृत → पालि → 10 - ऋ ×

वेद

13 — 9 ✓, 4 ×

रामायण

महाभारत

बुद्ध

1 - 500 ई० | 500 - 1000 ई० | 1000 ई०

→ प्राकृत → अपभ्रंश → हिंदी

प्राकृत ↓ जैन

(10) (ऋ ×)

अपभ्रंश ↓ (8) ऋ × ऐ × औ ×

हिंदी ↓ स्वर - अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ।

KHAN GLOBAL STUDIES

Most Trusted Learning Platform

THANKS FOR WATCHING